श कु न्त ला

[राजस्थानी खण्ड काव्य]

जग जाणै है नारी कोरी, आंसू री बनी पोटली है,
पण जग नै हूं जतला देस्यूँ, आ मोटी शकत जोत री है।

प्रकाशक:

देवानंद बारहठ
बारहठ प्रकाशन
फेफाना (श्रीगंगानगर)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान स्यूं कक्षा १० सारू
स्वीकृत संस्करण

पैलो संस्करण 1974
मूल्य : 2-00

मुद्रक:

रामस्वरूप कुमावत
अनुपम प्रिण्टर्स
झुँझुनू

मंगळ कर

तूं जुग नारी जुग री सोभा,
जुग री आभा जुग धरम सार ।
जुग जुग स्यूं जागी अटल जोत,
मां, बहन, नार रो अमर प्यार ।

तूं सुरसत काळी, करणी है,
तूं सकति भकति रो भाव अमर ।
मेरो जगती री भावी रो,
तूं मंगल कर, तूं मगल कर ।

भूमिका

शकुन्तला री बात घणी जूनी है पैली पोत शकुन्तला री कथा मा' भारत रै आदि पर्व में मिलै है। इयै रो नाम 'शकुन्तलोपाख्यान' है। पण आ पुराण और इतिहास री बात है, सीधी सादी, खरी खरी। न इयै में रस है और न कोई आदर्श। राजा दुष्यन्त आश्रम में आवै। कण्व हाजर कोनी। शकुन्तला स्यूं राजा रो प्रेम होवै पण शकुन्तला शर्त राखै— 'म्हारे जायोडै नै राजा बणावै तो थारै सागै ब्याह करूँ।' राजा शर्त मान लेवै। ब्याह पाछै वो आपरी राजधानी हस्तिनापुर चल्यो ज्यावै। शकुन्तला रै लडको होवै। ६ वरस कै बेटे नै सागै ले'र जद बा दुष्यन्त री सभा में पूचै तो राजा बियै नै पिछाण तो लेवै पण लोक निन्दा स्यू डर'र नट ज्यावै—'मैं तो तनै जाणूं कोनी।' शकुन्तला गुस्सै होवै। राजा नै श्राप देणै री सोचै। बीं टेम आकाशवाणी होवै—'शकुन्तला साच बोलै है। बेटो थारो ही है। इयै नै पाळ।' सभा में सगळा इयै आकाशवाणी नै सुणै। राजा शकुन्तला नै आपरी राणी बणा लेवै। मा' भारत री ई का'णी में ज्यान कोनी। आ सफा फीकी लागै है।

२ इयैं री नायक देवता या ऊँचे कुल रो, धीरोदात्त गुणां स्यूं सम्पन्न होवै। 'शकुन्तला' रो नायक दुष्यन्त ऊँचै कुल रो क्षत्रिय राजा है और धीरोदात्त भी है।

३. शृंगार, वीर और शांत रसां में स्यूं कोई एक रस प्रधान होवै। 'शकुन्तला' में शृंगार रस री प्रधानता है।

४. इयैं री कथा या तो इतिहास प्रसिद्ध होवै या सज्जनाश्रित। 'शकुन्तला' री कथा रो आधार महाभारत और अभिज्ञान शाकुन्तल' है। या इतिहास प्रसिद्ध वात है।

५. इयैं रै आरम्भ मे मंगलाचरण और वस्तु-निर्देश होवै है। 'शकुन्तला' रै आरम्भ मे पुराणै तरीकै स्यूं तो कोई देवी-देवता री विणती कोनी पण नयैं जमानै सारू कवि नारी-सगति की वन्दना जरूर करी है।

६. एक सर्ग में एक ही छन्द रैवै। और कम स्यूं कम आठ सर्ग होणा जरूरी है। 'शकुन्तला' रै हरेक सर्ग मे न्यारा छन्द है। तीसरै सर्ग मे स्वच्छन्द छन्द है पण आज रा कवि इयैं रो भी प्रयोग करण लागग्या है। हिन्दी में श्री सरल आपरै महा काव्य "सरदार भगतसिंह" रै बाइसवे सर्ग मे स्वच्छन्द छन्द रो ही प्रयोग करचो है। 'शकुन्तला' रै आठवे सर्ग में 'साकेत' रै नवें सर्ग

दायी गीत-शैली
इयै मे दस है ।　　　अपणायी गयी है । सर्गा री संख्या

७. महाकाव्य

जंगल,　　　में सांझ, सूरज, चाँद, रात, दिन, पहाड़,
चाइजै　　　ऋतु, शिकार और युद्ध रो वर्णन होणो
। 'शकुन्तला' में इयां सगलां रो वर्णन है ।
इयै भांत स्यू नियमां रै मुतावक तो ओ महाकाव्य

साफ दीखै है । जकालोग 'प्रियप्रवास' साकेत, कामायनी और आज रै जमानै री दूजी कई रचनावां नै महाकाव्य कोनी मानै और वां में कोई न कोई कसर काड देवै, वै 'शकुन्तला' रै वास्तै भी कह सकै है कै इयै रो आकार छोटो है, इयै में महाकाव्य जिसी गंभीरता और व्यापकता कोनी और गीतां रै कारणै कथा बिखरयोडी सी है पण अै सारी वांता कैता बखत इयै बात रो भी ध्यान राखणो चाइजै कै 'शकुन्तला' नये जमाने रो नयो महाकाव्य है । जे इयै में कोई पुराणी शर्त पूरी न भी होवै तो भी इयै रो काव्य-सदेश देख'र इयै ने महाकाव्यत्वरी संज्ञा दी जा सकै है ।

काव्यत्व

काव्यत्व री दृष्टि स्यूं 'शकुन्तला' एक सुन्दर और प्रौढ रचना है । कवि इयै में शृंगार, वीर, शांत आदि कई रसां रो वर्णन करयो है पण खास रस शृंगार है। प्रेम रै बारे में जकी वातां कैयी गयी है, बी' में व्यापक्ता और निरालोपण है :—

झन-झनन घूँघरा बाज्या,
छन-छनन पायल्यां छणकी।
तपवन मधुवन सो वणग्यो,
टणका री टाल़ा झणकी।

राजस्थानी प्रभाव

शकुन्तला री कथा रो राजस्थान स्यूं चाये कोई सम्बन्ध ना होवो परण कवि रै देश काल रो असर तो जरूरी है। शकुन्तला कुरजा रै मार्ग आपरो संदेशो भेजै। काव्य रिसी आसीस देवै 'दूधा नाहियो पूता फलियो'। सिर पर पाग व दाढी रो वर्णन भी राजस्थान री याद दिवावै। कवि प्रकृति रो वर्णन करतां थकां अठै कै ऊँध्याल़ै नै कोनी भूलै। अलग अलग पात्रां री बातचीत, वांरी पौशाक, आदि कई बातां में राजस्थानी जीवण रो प्रभाव देख्यो जा सकै है।

सन्देश

'शकुन्तला' महाकाव्य लिखण रो कवि रो एक खास मतलब है। बो आ बताणो चावै है कै लोग नारी न अबला कैवै परण असल मे बा सकति रो रूप है। ई बात री घोपणा कवि शुरु में ही करी है:-

जग जाणै है नारी कोरी,
आँसू री वणी पोटल़ी है।
परण जग नै हूं जतल़ा देस्यूं,
आ मोटी शकत जोत री है।

आज रै जमानै में नारी री महानता रा गुण च्यारूं कानी गाया जारचा है। शकुन्तला रो रूप भी नयो पण लियोड़ो है। कवि नारी नैं 'धरम टिकाणी' 'गीता री वाणी' सत्य, शिव, सुन्दर और माणस री छेकड़ मंजिल मानै है। जे आज री नारी साच्यांई इसी बण ज्यावै तो मिनख रो भाग जाग ज्यावै और घर घर में सुख, शांति व समृद्धि रो वासो हो ज्यावै। फेर तो सारो समाज, देश और संसार भी इस्यो ही बण ज्यावै।

अन्त में मैं ओ विश्वास राखूं हूं कै कवि री कल्पना नैं अब खुलै मैदान मे खेलण को मोको मिलग्यो है सो आगै और भी वढिया वढिया रचनावा स्यूं राजस्थानी री भडार भर सी।

चन्द्रदान चारण

दिनांक २७ मई, १९६५ एम.ए, साहित्यरत्न

प्रिंसिपल,

भारतीय विद्या मन्दिर रात्रि महाविद्यालय,

बीकानेर (राजस्थान)

(ऊपर री भूमिका सम्पूर्ण काव्य स्यूं है। पाठ्यक्रम में ईं रो संक्षिप्त रूप राख्यो है)

दो आखर

घणां दिनां स्यूं 'शकुन्तला' पर महाकाव्य लिखणै री सोच राखी ही। धोरां री धरती रो मिनख जे शकुन्तला रै सागै पाड़, नदियां, नाला में घूमै तो इचरज री बात ही होसी, पण मां सुरसती री घणी घणी किरपां स्यूं म्हारी आ मनस्या पूरी हुई है।

'शकुन्तला' रो कथानक महाकवि कालिदास री 'अभिज्ञान शकुन्तलम्' रै नाटक स्यूं मोटै रूप स्यूं लियो है। कहाणी कालिदासजी री है, भाव अर भासा कवि रा अपणा घरू है। 'शकुन्तला' रो विकास स्यात् म्हारै जिसै छोटै मांथै गी मिनख स्यूं पार नहीं पड़ी हुवै, पण हूं तो म्हारै कानी ऊं पूरी चेष्टा करी है। कालिदासजी री शकुन्तला रै कथानक मे हूं थोडी भोत हेर फेर करी है, पण ओ फरक म्हारै विचार मे इत्तो अखरण आलो कोनी, पण ईं अदला बदली स्यूं शकुन्तला रै चरित मे म्हारी निजरां में ज्यादा निखार ही आयो है। बकत रै साथ संस्कृति, सिद्धात अर धारणावां में समय सारू अन्तर आही ज्यावै है, पण मिनखां री प्रकृति जुगां जुगा स्यूं एकसी रयी है अर एकसी ही रहसी। अतीत री 'शकुन्तला' में ईं जुग री शकुन्तला बणाणै रो पूरो जतन कर्‌यो है। आज री नारी नै भी दुरवासा रै शाप बरगा झटका झेलणा पड़ै है। ईं वास्तै ईं जुग में भी अणहोणी बातां कोनी। ईं जतन में जे हूं सफल हो सक्यो हूं तो म्हारै सौभाग री बात ही होसी। जे जुग जुग री शकुन्तला बण सकी तो मां राजस्थानी रो ही भाग मोटो मानूं।

भासा सारू म्हारी अरणी धारणा है । राजस्थानी भासा रै खातर आपां एक निरणय पर नही पूंच सक्या, ओ आपणो दुरभाग है । भाषा जित्ती सोरी अर लोक रुचि रो ध्यान राखसी वित्ती ही जन समूह रै नेड़ै पूंचसी । राजस्थानी रै काव्य रै प्रति आखै भारत मे घणो सम्मान अर कोड है । राजस्थानी नै अपणो मैदान त्यार करणो है । ईं वास्ते हूँ तो जन रुचि रो ध्यान राख'र भासा रो ध्यान राख्यो है । हिन्दी रा बै शब्द जका जी सौरै स्यूं नेडै आया, अर राजस्थानी रै मूल रूप स्यूं छेड़कानी नही करी, वानै हूँ अपणाणै स्यूं हिचक्यो नही । म्हारी निजर में राजस्थानी रो सलोनो भविष रै निरमाण में सहायक होसी: राजस्थानी भोत ही धनवान भासा है । हरेक भाव नै परकट करणै री पूरी क्षमता है । जे कठै ही कमी अखरे तो वा भासा में नही, भासा लिखण आला री है । ईं कमी खातर हूं हाथ जोड़'र माफी मागू हूं ।

जगत मानीज्ये कवि रै नाटक स्यूं कथानक ले'र मौलिक रूप स्यूं लिखणै रो हूं दुस्साहस ही कर,यो है । पण आतो मनपसन्द री बात है । जग पसन्द होसी के नही, आ तो विद्वानां अर पाठकां सारू है । पण म्हारी तो आ मनोकामना रही है के मां राजस्थानी री की सेवा कर सकूं ।

अन्त में हूं श्री चन्द्रदानजी चारण रो घणो आभारी हूँ जकां म्हारी पोथी री भूमिका लिखी । सागै राजस्थानी रै मोटै विद्वानां रो भी घणो एहसान म्हारै सिर माथे है जकां मनै लिखणै री प्रेरणा देता रवै है । म्हारै साथी संगलियां रै तो गुण भूल ही नहीं सकूं जकां मनै दिनरात लिखणै रो होसलो देता रवै ।

भूल चूक री माफी मांगू हूँ ।

– करणीदान बारहठ

लेखक री दूजी पोथ्यां

राजस्थानी-

(१) भिडियो (बाल -काव्य)

(२) झर झर कंथा (कविता-संग्रह)

(३) आदमी रो सीग (कहानी-संग्रह)

हिन्दी

(१) वड़वानल (कविता-संग्रह)

(२) कलाई का धागा (उपन्यास)

(३) प्रेमलता (उपन्यास)

(४) चाय के धब्वे (उपन्यास)

(५) कुहरा और किरणे (उपन्यास)

(६) औरत और जहर (कहानी संग्रह)

पैलो सर्ग

पेड़ाँ री छायां बैठ्यो,
हो विश्वमित्र तप ज्ञानी।
चिन्तन में घणो मगन हो,
हो परम लोक रो ध्यानी।

झड़ झड़ पत्ता झड़ता हा,
ही पतझड़ री रीतु आई।
बै एक एक पड़ता हा,
डूँगी री मनस्या आही।

दरखत रा गात हर्या हा,
सांपड़दै प्राण भर्या हा।
सूका ठूंठां सा होग्या,
कीं खातर अबै खड्या हा।

जद पून चली आयूणी,
पत्ता सागै सै हाल्या।
कीं अटक्या बीच मगां में,
कीं दूर दूर तक चाल्या।

सोची मन में आ जोगी,
ओ कूड़ो जग रो बासो।
पड़स्यां पत्ता ज्यूं जग में,
ओ झूठो सुख रो सांसो।

आ ममता घणी घनेरी,
हाँ एक एक स्यूं दूजा।
माया रो झूठो पड़पच,
औ कूड़ा बावां बूजा।

बस केवळ नाम सही है,
बो मोटो राम सही है।
जित्तो तप में म्हे तपस्यां,
वित्तो ही काम सही है।

जा जंगल में बै जम्या,
अन्तर जगती में रम्या।
इकलंग बै खड़्या रह्या हा,
बीं रामनाम में गम्या।

थर थर इन्द्रासण धूज्यो,
मन रो अनुशासण कांप्यो।
बो काया कांट उतारै,
माया रो शासण कांप्यो।

देवां री सभा जुड़ाई,
सगळी आ बात बताई।
चिन्ता में डूब्या सगळा,
इन्दर काया अळसाई।

इन्दर बोल्यो, हे देवो,
धरती पर तापै जोगी।
है इन्द्रासण रो भूखो,
है राजपाट रो रोगी।

तप भंग हुवै के विध है,
सोचो स्याणां भेळा हो।
औसर खोधां रोवांला,
माथो धूंवै सगळा रो।

नारद बोल्यो 'हूं कहद्यूं,
नर री दुरबलता नारी।
धन मन नै खींच लियावै,
आ मोहक रूप सुंवारी।

अब तुरत बुलावो भेजो,
आ परी मेनका मनहर।
नाचण में जड़ नै हर ले,
चेतन भूमै हर डग डर।

झन-झनन घूंघरा बाज्या,
छन-छनन पायल्यां छणकी ।
तपवन मधुवन सो बणग्यो,
टणकां री टाळा झणकी ।

चट-चटक फूलड़ा महक्या,
कू-कुहू कोयल्यां बोली ।
घू-घूँहूँ भँवरिया आया,
हँसा री आई टोळी ।

हा कमल खिल्या सरवरियै,
रूँखां रो पतझड़ भाज्यो ।
जौबन री काया भूमी,
लाजां रो हिवड़ो लाज्यो ।

झुक-झूम मेनका नाची,
ही हार जीत री बाजी ।
धरती रो माणस जीतै,
तो इन्द्रपुरी सा लाजी ।

पण जोगी हणौं अडिग हो,
बो अन्तर जगत रमै हो ।
इकलँग नरतन रमणी रो,
पग पग कठैंहि न थमै हो ।

जे इन्नै काम परबल हो,
तो बिन्नै राम सबळ हो।
ई काम राम रै जुध में,
कीं प्रेम-भाव सो बळ हो।

पण अन्त मेनका हारी,
बोली 'हूँ' थारी माड़ी।
तू जोगी जग रो जीत्यो,
आ काया चरणां डाळी।

है जोग जगत में मोटो,
के प्रेम भाव है छोटो।
जे जोग प्रेम में रमज्या,
है प्रेम जोग स्यूं मोटो।

हिवड़ै री कळियां खिलगी,
काया रै ममता मिलगी।
मनमधु री सरस हिलोरां,
बै इकरस में हिल मिलगी।

अब फूल खिल्यो ई रज में,
मां बोली, 'धरती' थांजी।
जावण री वेळा आई,
हूँ करम धरम स्यूं बांधी।

ओ फूल मात सम्हाळी,
बेटो री विपदा टाळी।
ओ सुरग धरा रो एको,
तूं पूरै मन स्यूं पाळी।

सरवर रै पाळ पड़ी ही,
जाणै ज्यूं लाल जड़ी ही।
रूँखा री ऊपर छाया,
ही खड़ी शकुन्त रुखाळी।

चूंचा स्यूं पाणी ल्यावै,
इमरत सी धार पिलावै।
एहड़ी घड़िया में फिरता,
इन कण्व रीसीजी आवै।

गीगीं नै गोदी लेली,
पंछी शकुन्त नै देख्यो।
लाड कोड स्यूं बीं रो,
सुनाम 'शकुन्तला' राख्यो।

●

दूजो सर्ग

मधु री मतवाळी मारुत री
हरा राज सांतरो छायो हो।
जौबन लजवन्ती नैणां में
अब पुळक पुळक मुळकायो हो।

झर झर झरणा झरता हा,
निरमळ रूपे सो रूप लियां।
धरती काया ने कंवळी कर,
चालै हा रंग सरूप करयां।

सूणी लागै ही धरा घणी,
सा हरी हरी ही कणी कणी।
जोवै नैणा ही जणी जणी,
जाणै सूंगा री मणी घणी।

भँवरा घूमै हा कळी कळी,
सूंघै हा सूणी भली भली!
झाला दे हा सै झूम झूम,
सौरभ बंटै ही घणी घणी।

अम्बर रो रंग सुरंगो हो,
चन्दै री आभा सूणी हो।
आभै रै सुमनां स्यूं साची,
धरती री दुनियां दूणी हो।

मधु प्यार पगलिया ले लीन्या,
पायलियां झणकै जगां जगां।
नैण मंगलिया झुबळक झुबळक,
हा हेत खिडावै मगां मगां।

ईं उभरै रूप बसन्ती में,
ही फिरै सकुन्तला बणी ठणी।
कानां में फूल झुमरिया हा,
छाती पर आंगी तणी तणी।

बा गौरी बरण गौरज्यासी,
ही आंख कटारा सी तिरछी।
ज्यूं नाक नुकीली सूअै री,
ही कमर कमाणी-सी पतळी।

सखियां रै साथ इसी सोवै,
ज्यूं चिरम्यां में मोती अनूप।
होठां पर हास इसो मोहै,
ज्यूं तारा री जोती सरूप।

बो लाज प्यार रो मूर्त रूप,
अल्हड़ जौबन झुक झूम फिरै।
पळकै मुळकै कर निरत थिरक,
कम्पन धड़कन नव नूर झरै।

'हा, हा,' री हँसी बिखरै ही,
जाणै मस्ती रो रंग उड़ै।
जगळ री हिंसा थमगी ही,
ओ हेत-भाव विखर्‌यो सगळै।

बा फटिक शिला पर जा बैठी,
जल जठै किलोळाँ हो चढ़र्‌यो।
बीं जळ रै निरमळ दरपण में,
मुखड़ै रो रूप सरूप बण्यो।

आ धरा धरी या नीर परी,
या नभस्यूं उतरी देवनार।
पळकां में सदा रखण जोगी,
के सूणापो आग्यो अपार।

हड़बड़ाट उठ्यो तपोवन में,
भभड़क्या सगळा खड़्या हिरण।
रोही मे मचगी धुंआधार,
अंधड़ स्यूं ढकगी लाल किरण।

रूँखा स्यूं पंछी भाज खड़्या,
बरणाट ऊपड़्यो सखियां रो।
मिळग्यो घणकरोर भेळापो,
रंग बदळयो छण में अंखिया रो।

बिलबिल करता बचिया रहग्या,
मां भिड़क भाजगी दूर कठै।
परघुरी बड़ी ही कई नार,
बे पूछो 'थे हो अठै कठै।'

'के बात हुई, के बात हुई?
कण विकळ करी आ तपोभूम?
ओ कण्व रीसी रो आश्रम है,
आ प्रेम-भूम आ शान्त भूम'

घुड़लां री टापां 'खटट, खटट,
नेड़ै सी सुणनैं में आई।
इक ठौड़ शकुन्तला खड़ी रही,
आ ठहर्‌यो रथ इक सामै ही।

रथ में बैठ्‌यो हो वीर पुरुष,
मुखड़ै पर मूंछ्‌यां मुग्ळांती।
भुजदंड वीर रा बब्बर-सा,
नैण मरदानगी मदमाती।

सिर मुकुट हाथ में धनस लियां,
हो कवच तण्यो हो कजराळो ।
सोनै रै रथ में इसो जचै,
ज्यूं कामदेव हो मतवाळो ।

बा खड़ी धरा ज्यूं मांडचोड़ी,
ही छुई मुई सी लजवन्ती ।
मूरत ज्यूं मूक तपस्या री,
जोगण सी चिर थिर जड़वन्ती ।

टक गड़गी ही बीरैं ऊपर,
बा गड़गी ज्यूं भू रै भीतर ।
टक हिली नहीं बा डुली नहीं,
ज्यूं द्वैत अर अद्वैत अमर ।

जद अलक उठा कीं पलक उठा,
नैणा स्यूं जोई शकुन्तला
चपल तार जुड़ग्या चपला रा,
हिवड़ां रा जगमगग्या दिवला ।

धड़कन कम्पन होगी तन में,
हिय में भावां रो ज्वार उठ्यो ।
आंधी सी आई मस्तक में
सो हलचल रो संसार बण्यो ।

पग हाल्या सा धरती हाली,
लागै अम्बर हलचल मचगी।
डोलण लाग्या सै दिग दिगन्त,
नैणा नै राह नहीं सूझी।

ऊँच फंचूल चाली शकुन्त,
नैणा में छायो अंधियारो।
कीं डाळ पकड़ कीं आप सम्हळ,
आखर आंचल नै उळझायो।

लेरै झांकी, ओ होग्यो के ?'
बो पट सुळझावै खड़्यो खड़्यो।
झट झांक मुँह नै फेर लियो,
बो इकटक जोवै गड़्यो गड़्यो।

बोल्यो 'कुण है ? कूंकर आई ?
कूंकर तू पूठी चाल पड़ी ?
नैणा में नेह उड़ेल दियो,
हिय रो थाह उखाड़ चली।

ओ रूपकळा, लावण्यमयी,
तेरी सी धरा नहीं जामी।
नाम ठाम तो नहीं जाणू,
जाणू तू मेरी जिन्दगानी।

री प्रेम न पूछै जात पात,
ओ प्रेम न जाणै नाम ठाम।
री प्रेम पूर्ण परमेशर है,
ओ सकल धरम रो सकल धाम।

घट घट में बैठ्यो प्रेम देव,
हर हिय में ईं री ढाणी है।
आ बात कियां समझाऊँ, तूँ,
मेरै हिवड़ै री राणी है।

फूटी बाणी बां बोझा स्यूं,
'जोड़ी तो इसी बणै कोनी।
मत चूक शकुन्तला औसर है,
ओ औसर भळै मिलै कोनी।'

दोनां रै गळ बन माळा हो,
क्षोना री आंख्या आंख्या में।
दोनां रा सपना साची हा,
कीं भाव बण्या कीं भासा में।

अब तुरत बुलाऊँला, तन्नै,
अव रथ सजीलो सज आसी।
आ लेव मूंदड़ी सैनाणी,
मिलसी री वेळा फिर आसी।

तीजो सर्ग

बायरियो सूत्यो नींदड़ली,
ढळती रजनी रो ढ़ळै चांद ।
टिमटिम तारा हा कठै कठै,
लंगस में हा बिन जात पांत ।

रूंखा रा पत्ता सोया हा,
आखी जगती ज्यूं मौन खड़ी,
जळ जप्यो ऐन ही जोगी सो,
ज्यूं धाप्योड़ी सी रैन पड़ी ।

सै चिड़ा चिड़कल्यां आलणियें,
जप्या हा सोरी नींदड़ल्यां ।
जाणं सूती मां बसुन्धरा,
ले अपणा आखा टाबरिया ।

सुध ओढ़ी सूती शकुन्तला,
नींदड़ली बैरण उचटी ही ।
पसवाड़ो फोरै बार-बार,
आवण आगी इक हिचकी ही ।

पण ओल्यूं मीठी पीड़ लियां,
हिवड़ै में झोळ उठावै ही ।
सोयो नैणा में कन्त जणां,
बा नींद भळै क्यूं आवै ही ।

आभा फूटी अब पूरब में,
चंदै रो मुखड़ो फीको हो ।
तीतर बीतर होग्या तारा,
अम्बर रो आंचळ नीको हो ।

घड़ियाल बज्या अब मिन्दर रा,
धन-धनन नगारा गूंजउठ्या ।
झन-झनन झांझ झकार उठी,
सैं पख पखेरू कूंज, उठ्या ।

बण परमेशर नैं याद कर्यो,
'हे जगत पिता हे जगदीशर ।
तू अग जग भाग विधाता है,
तू ही बाहर तू ही भीतर !

म्हे अबळ सकळ जगती प्राणी,
तूं सबळ सरब है शक्तिवाण ।
म्हे दास सदा तेरा स्यामी,
आखै जग रो है तूं विधान ।

म्हे करम करां तेरै सिर पर,
नेम धरम स्यूं सही मान।
आगै भविप तेरै सिर पर,
म्हानै तूं भोळा मिनख जाण।

म्हे आंधा, लूला, लंगड़ा हां,
तू राखी रथ री डोर साम।
आछी या माड़ी तूं करसी,
सो तेरो ही है काम धाम।

म्हे तेरा हां तू म्हारो है,
ओ सकल मोह रो डेरो है।
पण जीव जगत में भेज्योड़ा,
राखां हा तेरो मेरो है।

सुख दुख है म्हारै करमां स्यूं।
पण तेरी महर सदा ऊँची।
तूं दीन हीन रो साथी है,
तूं करम भाग री है कूंची।

के मांगू तुच्छ भिखारण हूं,
तूं मोटो धणी महादानी।
म्हारै तूं भाग-विधाता रो,
सौभाग सदा ऊँचो मानी।

अब याद करयो बण परणीज्यो,
बा मेल मूँदड़ी मूरत-सी।
भरतार कऊँ करतार कऊँ,
पन दूर न होवै सूरतड़ी।

छण छण गी घणी अडीक मनै,
ऊभी हो जोऊँ बाटड़ली।
नित लीक भींत पर खींचूं हूं,
मारग में देखूं घड़ी घड़ी।

इक पल बीतै ज्यूं जुग बीतै,
क्यूं आग बिरह री सुलगायो।
मेलो घड़ियां रो इसो बण्यो,
हिवड़ै में होळी कर भाग्यो।

नारी के है? इक कुसमलता,
भूठो देही रो गरब करै।
नर रूंख चढै तो हरी रवै,
नीचै नारां सा निस्ट करै।

आ सुरजमुखी, सूरज सामै,
सौवै है सूणी खिली खिली।
आ मीन बापड़ी जळ जीवी,
जळ में है रहवै हिली मिली।

चपला बिन मेघ कियां सोवै,
मोती बिन आभा भाटो है।
भाराास बिन मनस्या गति हीरा,
जीवरा सो जीरो काठो है।

कै इसै काम में जा फंस्या,
भोळी नै जा'र भुला दीनी।
दो घड़ी मोह रै बसीभूत,
जीवरा भर मनै सजा दीनी।

कन्त में उलझी मांय शकुन्त,
बारै दुरवासा आय खड़्यो।
हेल्यो मार्यो बरा 'भीख घाल,
रिसीयां में मोटो भोत बड़ो।

अन्तर जगती में रम्मेड़ी,
मीठां गुटका में गम्मेड़ी।
बा बहिरजगत री कियां सुरा,
जद कन्त सन्त स्यूं बिलमेड़ी।

हाका कर धाप्यो दुरवासा,
कूंटो शकुन्त रो नहीं खुल्यो।
आंख्यां री तोरी चढ़गी ही,
अर रोम रोम में रोष भर्यो।

ओडै गाड्यो लठ रीसा में,
बारैं शकुन्तला झट आई।
भैरव सो ऊभो देख ओड,
झंवळी नारी हरण कुंवळाई ॥

बोल्यो साधू, "अै शकुन्तला,
अपमान न सैवै दुरवासा।
भरतार तनै जा भूलैलो,
जंगळ में करसी घरबासा।

बिजळी-सी कड़की आ बाणी,
अड़गी शकुन्तला रै माथै में।
जड़सी होगी सा देह तुरंत,
ज्यूं ज्यान गई सरटै में।

बोली बा आखर धीरधार,
"बाबाजी आछो नेह कर्यो।
बेटी री ऊभी खेती पर,
ओ चोखो मीठो मेह कर्यो।

थे मोटा मोहढ़ा माणस हो,
तपस्यूं तापी है देह सकल।
आखी जगती मैं ताप्योड़ी,
थारी है सुळभी घणी अकल।

म्हे टाबर छोटी बुद्धि रा,
होटा रो दूध नहीं सूक्यो।
के जाणा अच्छी मंदी नै,
के धरम अर अधरम कर्‌यो।

मोटा माणस जे रीस करै,
छोटै री ओछी अक्कल पर।
सागर जे धीरज खो देवै,
धरती री माड़ी हलचल पर।

माड़ी चिन्तै जे मोटापो,
ओछी सोचै जे अच्छाई
तपस्यू क्यू तपसी धरा इयां,
कंवली होसी क्यू करड़ाई।

जे दोष बिना ही दंड मिलै,
जे पाप बिना ही नरक धाम।
तो धरम धरा पर क्यू रहसी,
क्यू टिकसी जग में भलो काम।

सान्या तान्या जे रीसी लोग,
कोड़ी दाणा पर बिक ज्यासी।
तो भगवां गाबा बाबाजी,
दाणा जोगा ही रह ज्यासी।

थे तप रै बळ रो तरणावट,
भलो बुरो तो नहीं सोच्यो।
मोटा माइत हो पूंच्योड़ा,
छेटी कानी तो ना लोच्यो।

मैं मान तान थारो करती,
आछी करती हूं अगवाणी।
जे म्हारै खातर थे कहता,
सौभागवत्ती हो कल्याणी।

हो पति रै ध्यान मगन ईसी,
हूं सुण न सकी थारी बाणी।
ओ शाप बताओ कियां मिलै,
आ बात गुरुजी नहीं जाणी।

हूं भटकू भूंडै भाटां सैं,
रोऊँ रोही में रुळी रुळी।
माइत रो हिवड़ो हरसावै,
आ बात जगत में नहीं सुणी।

गळगळी शकुन्तल होगी हो,
बसबसिया पाट्यो हियो सबळ।
बरसण लाग्या हा नैण कमल,
नारी रो असली रूप संजळ।

साधू रो बादू रूप छिप्यो,
अब मुनि रो माइत जाग उठ्यो।
आंख्या गीली सी होगी ही,
अन्तर में दाव्यो नेह जग्यो।

बोल्यो बो, 'बेटी शकुन्तला,
साधू तो मिनख अधूरो है।
थोथो भांडो बिन पाणी रो,
टैं टैं बोलै बस कूड़ो है।

तप पर करड़ावण करां जकी,
हूं जाणी साची रूड़ी है।
हाँ करमहीण काळस जगरा,
आ साची तपस्या तूड़ी है।

जे काया माया में रैती,
ममता री अकल सकल आंती।
जग में रहणै स्यूं जीवण री,
परिभाषा सही समझ आती।

ई जगस्यूं लैर छुडाणों ही,
जोगी सो असली धरम नहीं।
जे भोगी हो जोगी रहले,
बो जीवण रो है मरम सही।

बेटी आ मेरी मूल जाण,
बिन सोचे भाखी बात जणां।
कोई सैनाणी देख फेर,
भरतार करैलो याद तनै।

बेटी रै सिर पर हाथ फेर,
मुड़गे दुरवासा दूर गया।
मनहार शकुन्तला मांय बड़ी,
अणचित्यो मन में सोच हुयो।

अै काया तेरै करमां में,
के के भावी रा जाळ बिछ्या।
अरै विधाता ईं पोथी में,
काळा पीळा के लेख लिख्या।

के दिनगे ही के अब बीतै,
ओ मोडो कठऊँ आय मर्यो।
मेरै सपनै री दुनियां में,
भूँडै माथै रो आय खड़्यो।

चिन्ता में डूबी शकुन्तला,
जा पड़ी ईश रै चरणां में।
मैं सुणी इयां थे दीनबन्धु,
करुणा सागर हो करुणामय।

फट हो खड़ी व्रण लीं सम्भाळ,
मुंदड़ो री, गाचो गैनाग्गो।
झट चूम हिये में चिपकोई,
'मेरै भावी नै सुळझाणो।

हिवड़ै में चालो लू आंधी,
खूंखू, करती आंधी आई।
तप्पंण लाग्यो हो ऊन्याळो,
कूंपण रूंखां री कुम्हळाई।

अम्बर में तप्पै सूरजड़ो,
हिय में तप्पै ही बिरह आग।
इन्नैं नैणां रो नीर जळै,
बीन्नैं धरती रा बळै बाग।

झड़ झड़ पत्ता हा झड़ै घणा,
धरती री आंचळ पीळो हो।
काया शकुन्त री छीण हुवै,
पलकां रो आंगण गीलो हो।

जे धरा जळै तो सागर रै,
हिवड़ै में ऊँची हूल उठै।
मिलणै री बेळा इसी हुवै,
दोनां रा हिवड़ा झूल उठै।

दिवलै रो प्रेम पतंग में,
दोनां रा मनड़ा जळै घणा।
घणा रो है मोह पपीहै स्यूं,
भाज्यो आवै है दूर जणां।

बा कदे रूंख रै ऊपर चढ,
जोवै बादळ री टोखां में।
टप टप री कूड़ी टापा में,
आवै बा जद कद धोखां में।

बा कदे नदी रै तीर फिरै,
रूंखा रै ओलै जाय घुळै।
घिर घिर पूछै बा पंछ्यां नैं,
जे थानैं घुड़ला टाप सुणै

बा फिरै बावळी केश खिंडा,
होटां पर फेफी आली ही।
बा लता कुंज री इसी बणी,
ज्यूं अळसाई बिन माळी ही।

चटकै चटकै पूठी चाली,
पूची बाबै री कुटिया में।
बै गुफा छोड़'र आग्या हा,
रम्मेड़ा माळा मिणियां में।

बा बोली, मोटा मुनीदेव,
अन्तरध्यानी हो अलखलखी।
मुकती रो मारग अपणायो,
जोगी री जुगतां नैं परखी।

रीधी सीधी स्यूं ऊपर थे,
पूंच्योड़ा ग्यानी ध्यानी हो।
है तेज तपस्या रो पूरो,
थे परमधाम रा मानी हो।

थे परमारथ रो पुण्य घणो,
भेळो कर राख्यो भोळी में।
गया सांकड़ सच्चिदानंद,
पूंच्या परमेशर पोळी में।

पण अन्तर नैणा खुली रवै,
हो भौतिक जगस्यूं पलक बंद।
ई मन री मुकती खातर ही,
जे मुनि रो होवै मोक्ष मंत्र।

आभै री अलख अटारी में
कुटिया जे सन्त बसा लेवै ।
धरती स्यूं अपणो धरम तोड़
धूणी जे गगन रमा लेवै ।

पर री पीड़ा स्यूं परै हो'र
परलोकी आळै निस्कामी
कर निरो नेह नरायण स्यूं
नर स्यूं भागै हो निस्पापी ।

गुफा बड़े जे ग्यान ध्यान
जंगळ जोवै जे जोगी जण ।
भगवो भागै जे भाटां में
ढूंढै पत्थर में परमानंद ।

तो भोळापै नै फेर भळै,
कुण भलो राह बतावैलो ।
रोही में रुळता मिनखां नै,
कुण जीवण मरम सुझावैलो ।

अब कण्व कयो, 'क्यूं आज इयां,
दरशन री मोटो बात करो ।
क्यूं परमेशर री वेला में
मन नै यूं सन्ताप करो ।

थे बात इयां क्यूं भाखी आ,
म्हानै थे बात बता देओ ।
माणस तो आखर माणस है,
के भूल हुई जतळा देओ ।

मां बोली, 'थे तो दुनियां स्यू,'
अपणो ओ मुखड़ो मोड़्यो है ।
सागण स्यूं नेह लगा लीन्यो,
आपण स्यूं नातो तोड़्यो है ।

थांरी लाडेसर डावड़ली,
जंगळा में भटकै भूंडी सी ।
रूँखां स्यूं बैठी बात करै,
दाह में ऐन दब्योड़ी सी ।

जे भोळी नारी जीवण नै,
दुरवासा इयां रुळा देसी ।
तो धरती री माता अपणो,
गरबीलो रूप गळा देसी ।

के काम साधना आई आ,
के तोल तुलैलो तापस ओ ।
माड़त भूलै जे माड़तपण,
तो मोल घटैलो माड़त रो ।

माइत री मोटी मरजादा,
माइत है मोटो तपधारी।
माइत रो धरम निभाले तो,
माइत है पूरो अवतारी।

अब कण्व कयो, 'हूँ भूल्यो हो,
मनै न शकुन्त रो ध्यान रयो।
जोगी जाणै के जगती रो,
थे कयो हणै तो ग्यान हुयो।

जाओ सगळा नै कहलाद्यो,
शकुन्त सासरै जावैली।
भेजण री करल्यो तैयारी,
हण देर न होवण पावैली।

बी कण्व रिसी री आ वाणी,
पूंची आश्रम री हर कूंटां।
रूं रूं शकुन्तला हर्‌या हुया,
खिलग्या नारी रा सै बूंटा।

सखियां सारी भाजी आई,
फुटरापो और सजावण नै।
पीरै रो पूरो रूप झाड़,
हण सासरलो सिणगारण नै।

अब कण्व संदेशो आं पूंच्यो,
बाई नै वेगो भीर करां।
मां संग गोतमी जावैली,
सागै रखवाळा दोय करां।

सोळा सिणगारी शकुन्तला,
हरण त्यार सासरै जावण नै।
इक नैण हँसै, इक नैण रुदन,
आ जीतन करै कीं खावण नै।

आगै चालै ही शकुन्तला,
लारै सखियाँ री लड़ालूम।
बा हालै ही पग थाम थाम,
धरती री रज नै चूम चूम।

पलकां नीची हा होठ बन्द,
कर कोमल पट मे ढक्याढूम।
नैणा जोवै ही धरती नै,
ज्यूं लज्जा रो सागरा सरूप।

सखियाँ लैरै हळवां हळवां,
बाई रा बसतर साम्है ही।
निजर न लागै ई काया नै,
पर नैणा ओटै थामै ही।

बारै ऊभा हा कण्व मुनि,
बाई नै भीर करावरा नै,
सारै ऊभी ही माताजी,
सागै बाई रै जावरा नै ।

बाई नै आती देख मुनि,
दो कदम और आगै चाल्या ।
आ गिरी शकुन्तल चरणां में,
बाबै बाई रा कर भाल्या ।

बाई आ कहणो चावै ही,
'आशीश देओ ये बाबाजी ।'
परा गळो गळगळो होग्यो हो,
बोली बस केवल 'बाबाजी' ।

बोल्यो बाबो, बेटी शकुन्त,
तेरै बिछोह री वेळा है ।
बाई जावै तूं सासरलै,
औ तो जीवरा रा खेला है ।

बाबै रो घर तेरो कोनी,
ओ आज तलक ही तेरो हो ।
बेटी रा माइत सास ससुर,
माइत रो घर तो डेरो है ।

बाबो बोल्यो की धीर धार,
हूँ जाण्यो हूँ तो जोगी हूँ ।
हूँ बाप साथ बेटी रो हूँ,
हूँ जाण्यो हण निरभागी हूँ ।

ई दुख नै कोई के जाणै,
केवल जाणैलो बाप सदा ।
औसर समझैलो बाप आप,
जद करसी बेटी बाप बिदा ।

बेटी, तूँ के तेरै सागै,
ई घर रो मोहक रूप गयो ।
लागैलो आश्रम सुनो सो,
मेरी भूमि रो भूप गयो ।

री, मैं के ओ मेरै सागै,
ओ खड़्यो हिंवाळो रोवै है ।
धरती रोवै, अम्बर रोवै,
आश्रम में कण कण रोवै है ।

सखियां रोवै, माता रोवै,
औ पंख पखेरू आ पूंच्या ।
गायां हिरण्या सै आश्रम री,
गळगळा गळा आंखो रूंध्या ।

जो गळियां घूम्या करती ही,
बै गळियां सूनी लागैली ।
तूं आया जाया करती ही,
ओ डोढ्यां खावण आवेली ।

तूं गायां दूया करती ही,
अै गायां नहीं दुहावैली ।
सै सागै जावण नै बेटी,
अै खूंटा घणी तुड़ावैली ।

मै हिरणा तेरी साथण है,
अै रोज हियै में रोवैली ।
तेरै खोजां नै सूंघ सूंघ,
कोसां रोजीना जावैली ।

गायां रो दूध सूक ज्यागो,
कोयलड़्यां गुमसुम हो ज्यासी ।
सै फूल बळैगा बागां रा,
रूँखा री कूंपल झड़ ज्यासी ।

पंछी भाजैला बाग छोड़,
सरवर रो पाणी सूकैलो ।
बेटी तेरै बिन साच्ची कूं,
ओ आश्रम कोजो लागैलो ।

गायां थें क्यूं भांकों हो,
बाई नै अठै भिजायूंला ।
हिरण्यां थें अब क्यूं रोत्रो हो,
बाई नै बेगि बुलाल्यूंला ।

गळो बाप रो भरि आयो,
बेटी री आंख्यां बरस पड़ी ।
माता री आंख्यां गीली ही,
रोवै ही सखियां खड़ी खड़ी ।

सखियां स्यूं बोली अब शकुन्त,
मन में कीं थोड़ी धीर धार ।
थे बाबाजी री सुध लीज्यो,
म्हारो बापू स्यूं घणो प्यार ।

बेलां में पाणी दे दीज्यो,
गायां री सुधियां ले लीज्यो ।
करज्यो हिरण्यां स्यूं प्यार घणो,
बेटी नै बाफर नेह दीज्यो ।

सखियां बोली, म्हारी साथण,
कुण म्हारी सुध बुध लेवैलो ।
ऐड़ो तूं नेह जुड़ा चाली,
ऐं नैणा कौण धुम्रावैलो ।

श्रां प्यार भरेड़ा प्याला सूँ,
उफणां हा नेह रा आंसूड़ा।
कुण धीर धरावै ईं औसर,
सारां रा हिवड़ा एक जुड़्या!

हळवां हळवां सै चाल पड़्या,
ज्यूं परबा रा बादल चालै।
सैं नैण बरसता चालै हा,
सै संग सहेल्यां बै हालै।

मागै हिरण्या सागै गायां,
सै पंख पंखेरू सागै हा।
सागै जाणै री बात करै,
जग हालै सारा आगै हा।

बाबोजी बोल्या हण बेटी,
तेरो सुख उपवन लहरावै।
दूधा नाहो, पूतां फळियो,
पति रै सुख में सरसावै।

छूटो सो आश्रम चाल पड़्यो,
आँसूंड़ा आंख्यां न्हावै ही;
मुंदड़ी सम्हाळ, चाली शकुन्त,
दो रीसीकुंवर, मां सागै ही।

पांचवों सर्ग

दरबार लागर्‌यो मोटोड़ो,
सामंत सांतरा बिराजमान ।
मसनद पर बैठ्या हा वजीर,
सिरदार सांकड़ा घणांमान ।

आंख्यां सगळां री लाल लाल,
मूंछ्यां ही भँवरा खायेड़ी ।
तप तेज तपै हो माथै पर,
सगळां री दाड़्यां बाहेड़ी ।

सिर पर पाग सँभाळेड़ी,
तरवार हाथ में थाम्योड़ी ।
रण रा बांकड़ला बीर जियां,
काया पोरस में धाप्योड़ी ।

सोनै री कुरस्यां सिणगारी,
भींतां पर चित्र बणेड़ा हा ।
बै एक एक स्यूं सूणा हा,
मोत्यां स्यूं घणा जड़ेड़ा हा ।

कीमै तो जोधा जूझै हा,
कीमै पुळकै हो पुळक प्यार ।
कठैही मुळकै हा फूल घणा,
कठैही मटकावै नैण नार ।

कठैही हिंवाळो ऊभो हो,
माथै पर धोळी पाग बांध ।
कठैही किलोळां करै सलिल,
बिच में न्हावै हो मधुर चांद ।

कठैही माता री धरती पर,
लहरावै श्यामल सरस धान ।
कठैही प्रात री बेळा में,
ऊभो हो मां रो धन किसान ।

कठैही देवता मांडचोड़ा,
मोटा माणस हा छांटचोड़ा ।
ध्यानी मानी हा कठैही कठै,
वेदां रा आखर बिन मोल्या ।

औ मूक जीव ईं भूमि रो,
सो ऊंडो भेद बतावै हा ।
ओ संगम इसो बण्येड़ो हो,
जन मानस रै मन भावै हा ।

इत्तौ में इक हलचल मचगी,
बेळा होगी निरप आवरा री ।
'घरणी खम्मा अन्नदाता' री
बाणी फूटी जम ज्यावण री ।

हरण देशधरणी हो आ पूंच्यो,
जचग्या हा आ सिंहासण पर
सौनै रो ताज सांतरो हो,
ज्यूं संयम होवै शासरण पर ।

ऊपर मन मौज किलंगी ही,
ज्यूं अहमभाव पर अंकुश हो ।
ईं निरपभेस में सिरणगारी,
ज्यूं धरती फैल्यो सूजस हो ।

राजा बोल्यो हरण 'सामन्तो,
है आज काम मोटो करणो ।
राजनीत में लोकनीत रो,
इक सुन्दर सो संगम करणो ।

शासक शासित री एक लड़ी,
जे आरज भू पर बरण ज्यावै ।
शासक रो घट ज्या काज भार,
शासित रो मन बळ बढ़ ज्यावै ।

हर गांव बणैलो इक शासण,
शासण में सगळा सीर करै ।
भेळा हो सगळा चाल पड़ां,
सै मिलज्या जे कीं भीड़ पड़े ।

संबळ स्यूं शासण नहीं जमै,
बुद्धि नै दूर भगाणै स्यूं ।
राजा रो आसण नहीं रवै,
जनमत नै परै हटाणै स्यूं ।

जद गिरह वजीर उठचो बोल्यो,
'जनमत रो कोरो छिछळापो ।
गैला जामै है गळिया में,
रैसी शासण में नित स्यापो ।'

राजा बोल्यो, 'आ बात नहीं,
थे जन विवेक नै प्यार करो ।
मानस बदळो थे माणस रो,
आखी धरती में प्यार भरो ।

गौरव है राज कराणै में,
निरबळता नैण डराणै में ।
आ भूमी सारी भायां री,
के डर है बात बताणै में ,'

बोल्यो बो, 'म्हार अन्नदाता ।
जे हुकम हुवै तो अरज करूँ,
बोल्यो राजा, 'हां बात बता ।'

बारै ऊभा दो रीसी कुंवर,
सागै दो नार सुहागरण है ।
है कण्व रीसी रा भेज्योड़ा,
कुहायो 'काम राजशरण है ।'

राजा आरणै रो हुकम दियो,
सै हाजर रामशरण आया ।
सो देख हुया सै चकाचौंध,
परण मन में धीर थमा पाया ,

राजा बोल्यो-हरण हुकम करो,
क्यूं कण्व रीसी तो राजी है ?
बै महामुनीशर बड़ा घरणा,
म्हारै पर पूरा राजी है ?

है तपोभूम में कुशल खेम,
क्यूं जप तप सै निरबाध चलै ।
कांई सन्देशो सन्त कयो,
कीं करण जोग हूं आज भळै ।

माता बोली, हो धणी खमा,
पूरा तपधारी आप धणी।
हो आप सबळ शकतिधारी,
किरपा धणियां री घणी घणी।

आश्रम में मालिक घणो चैन,
बाबाजी जप तप मगन रवै।
आशीश कुहायो आप धण्यां,
थानै रोजीनां याद करै।

हाजिर होई ले हुकम सन्त,
शरणैं हजूर रै ल्याई हूँ।
थे राज काज में इसा रम्या,
ल्याई हजूर भुलाई हूँ।

आ परणी थारी राज धण्या,
है नाम भलो सो शकुन्तला।
आ हुई बावळी बीजोगण,
थारी अळसाई प्रेमलता।

'म्हारी परणी है शकुन्तला' ?
सुण गुमसुम होग्यो हो दुषन्त।
मुखड़ै रो आब उतरग्यो हो,
सरॉट मच्यो तन में तुरन्त।

धरती अम्बर हिलतो दीख्यो,
डगमग डोल्यो ज्यूं दिग दिगन्त।
उलटी दीखै सै भींत मुरत,
आंख्या आगै अंधड़ अणन्त।

माथो गोडा में लगा लियो,
हाथां स्यूं सिर नै साम लियो।
चट नाड़ हिली ज्यूं इयां कवै,
'ना मैं शकुन्त स्यूं ब्याव कर्यो।

देखै ही सोक्यूं शकुन्तला,
फूटी ज्यूं माथै पर हांडी।
गोडा ज्यूं पाणी पड़ग्यो हो,
लड़गी ज्यूं काया नै बांडी।

घूंघट रै ओटै दीखै हो,
भरतार सांतरो साची है।
अठै तो कोई कसर नहीं,
पण काया आ निरभागी है।

गुमसुम देख्यो जद राजताज,
माता नै चिन्ता जाग उठी।
ओजूं बोली कीं धीर धार,
कीं भावभार स्यूं दबीदबी।

थे कीं कीं स्यात् भूलग्या हो,
पीछाण हुई ना परणी री।
घूँघट उगटूँ जद जाणोला,
सागण सूरत है धरणी री।

उलट्यो घूंघट ज्यूं दीप जग्या,
मावस री घोर अँधेरी में।
पूनम मुळकी कीं दूर हटा,
बादळ री काळी ढ़ेरी नैं।

दो नैण नैण स्यूं घणा जुड़्या,
इक जोवै मोती डूबेड़ा।
दूजी नैं मोती लागै ज्यूं,
जळ रा है थोथा जाळ पड़्या।

इक रो विश्वास जमेड़ो हो,
दूजो विश्वास गमेड़ो हो,
इक में दीखै हो दूर दूर,
दूजी में दीखै नेड़ो हो।

पूनम चावै ही सागर में,
भावां री ऊँचो ज्वार उठै।
पण सागर जम पाषाण बण्यो,
जड़ सो होग्यो हो जठै कठै।

इक बोली-'इक है अहं त्वं,'
दूजी बोली-'है त्वं त्वम्,
आ 'मम' री ममता कियां जुड़ै,
जद संशय हो विश्वास स्वय।

बोल्यो राजा, 'क्यूं मात इयां,
ओ कूड़ो काळस लागै है।
क्यूं मेरी पावन काया नै,
परलोक तलक तूं दागै है।

ईं आरज भू रो धरम नहीं,
पर री नारी नै जोवण रो।
ओ पाठ नहीं म्हानै दीन्यो,
अपनी मरजादा खोवण रो।

आ धरा पिघळ जे मोम बणै,
सागर जे परबत बण ज्यावै।
पण वेद भूम री मरजादा,
ना डिग कठै ना डिग पावै।

कूड़ी बोळै क्यूं डोकरड़ी,
ना कण्व रिसी रो कहलायो।
कोई बैरी म्हारै ऊपर
ओ जाळ जोगणी बिछवायो।

अँ बैण शकुन्त रै इसा अड़्या,
ज्यूं तीर गड़्या आ छाती में ।
हो खून काळजै इया बळै,
ज्यूं तेल बळै है बाती में ।

बा बोली, 'कन्त इयां भूल्या,
के भूल सकै कोई जग में ।
अपणी नै परकर चाल पड़्या,
कर कांट कंटीला पग पग मे ।

ओजूं बा रज है पड़ी बठै,
जीं रज में हियो लगायो हो ।
बै रूंख खड़्या है सागण ही,
जीं रूंखा मनै छिपायो हो ।

बै पत्ता ओजूं झड़्या नहीं,
जिण साम्है आपां कलि कर्या ।
बै बूंटा ओजूं बल्या नहीं,
जिण साम्है माणस मोल कर्या ।

ओजूं तक धर पर बोह चांद,
जिण साम्है आपा एक हुया ।
तारा साखी, अम्बर साखी,
सागण वै सारा देव खड़्या ।

आ भूल कियां लागी थानैं,
बीं जगां चाल'र बतळाल्यां ।
जे जाण बूझ'र भूलो हो,
थारै हिवड़ै नै समझाल्यां ।

नारी रोई नर रै आगै,
पण नर रा भाव नहीं फूट्या ।
आखो आभो ही बरस पड़्यो,
धरती रा बाग नहीं ऊग्या ।

नारी बोली 'हे राजपुरुष,
धरती पर ओजूं धरम खड़्यो ।
सूरज ओजूं, चँदा ओजूं,
ओजूं धरती रो धान खड़्यो ।

राजा स्यूं धोखो करल्यो तो,
ओ धोखो धरम कुहावै है ।
परजा स्यूं धोखो करल्यो तो,
बो राज काज कहलावै है ।

ईं मिनख मिनख रै धोखै नै,
ओ राजनेम सुळझावै है ।
परजा धोखो जे राजा स्यूं,
बै कारा में फंस ज्यावै है ।

आ नारी नर स्यूं धोखो कर,
आ बस न सकै ईं धरती पर ।
दो बूंद नहीं गेरै माणस,
ईं मारुयोड़ी री माटी पर ।

जण नर सो नारी स्यूं धोखो,
सगळाऊँ मोटो पाप कन्त ।
ओ पाप जगत में नहीं छिपै,
कित्तो हो करल्यो जाप कन्त ।

धोखो करले जे धन धर स्यूं,
धरती पर धान नहीं दीखै ।
रळज्या आखा सैं मिनखजाम,
धरती पर जीव नहीं दीखै ।

क्यूं सूरज पाणी ल्यावैलो,
क्यूं चंदा धरा सजावैलो ।
क्यूं रजकण अपणो हियो फाड़,
धरती पर धान उगावैलो ।

क्यूं सागर रहसी मरजादा,
क्यूं हिम हिंवाळो पिघळावै ।
क्यूं नदियां चालै धरती पर,
क्यूं दिवस उगेड़ो छिपज्यावै ।

कित्तीं निरभागण तूँ भोळी,
मुंदड़ी बा कठै गमा दीनी ।
मारग में पाणी पीयो हो,
नदियां में स्यात् बहा दीनी ।

ओ दोष नहीं है राजा रो,
ओ दुरवासा रो शाप शकुन्त ।
चाली हण घर नै चाल पड़ां,
ओ सगळां रो दुरभाग शकुन्त ।

बोली शकुन्त, 'माता मेरी,
माइत रै घर स्यूं भीर हुई ।
माइत तो फरज निभा दीन्यो,
माइत घर लागूं घणीं बुरी ।

जे नारी साची हूँ माता,
तो नारी धरम निभाऊँली ।
मैं देखूंली दुरवासा नै,
हूँ अमर जोत जगाऊँली ।

जग जाणै है नारी कोरी,
आँसू री बणीं पोटळी है ।
पण जग नै हूँ जतळा देस्यूं,
आ मोटी सकत जोत री है ।

छठो सर्ग

आमैं सामैं हो उजाड़,
चली शकुन्तला हियो जमार।
आगै पाछै लियो रामनै,
काया नै कूंटै में बाड़।

डूंगर घणा डरावै हा,
दरखत आँख दिखावै हा।
डूंगी गाजै गाज शेर री,
बादड़िया अरड़ावै हा।

मारग कठै न दीखै हो,
कांट कटीला तीखा हा।
बोभां बोभां फिरै अंधेरा,
पग पग दीखै खीखा हा।

कठै न माणस बाणी ही,
जाणी ही न पिछाणी ही।
धुक धुक होवै घणो काळजो,
आखर नार सुहाणी ही।

पग में दगगड़ गड्डँ हा,
पैरां ऊँडा चूभै हा ।
पगां उभाणी फिरै बिचारी,
कांटा तीखा खूवै हा ।

तर तर पैरां खून भरै,
भाटलिया नै लाल करे ।
फाड़ चूनड़ी पाटी बांधै,
नीर नैण स्यूँ गाल पड़ै ।

आंचल दूध सम्हालै ही,
नैणा नीर सुकावै ही ।
आसै पासै देख मिरगल्यां,
डूंगी याद दिरावै ही,

रातां घणी डराण्यां ही,
सोती गाबा ताण्यां ही ।
नींद न आवै हियो कंपावै,
कूंटा सारी खाण्यां री ।

कांटा कपड़ा फाड़ लिया,
आछा बैर्‌यां लाड कर्‌या ।
गात बिचारा दीखण लाग्या,
बोल्या मन में लाज मर्‌या ।

कांटा कपड़ा फाड़ लिया,
आछा बैर्यां लाड कर्या ।
गात विचारा दीखरा लाग्या,
बोल्या मन में लाज मर्या ।

जीं काया पर भंवर डुलै,
लाज कमलन्यां देख छिपै ।
चांद शरमस्यूं बड़ै बादळी,
बा काया आ इयां रुळै ।

मिनख बावळो गरब करो,
ऊँचो माथो लियां फिरै ।
झूठी काया, झूठी माया,
होवे ज्यूं करतार करै ।

× × ×

पग्वत स्यूं पाणी झरै,
आभो झरै अथाह ।
अरै जमाना देख ले,
नारी झुरै धराह ।

कन्ता जे न पिछाणियो,
देतो कूरा ठोड़ ।
आंती जांती जोंवती,
करती दरशन कोड ।

घाव हियै में हा घणा,
घावां देह अशांत ।
च्यांरु कानी बीजगी,
होगी ऐन जड़ंत ।
मनड़ा जेंड़ो बगत है,
बेंड़ो देय टिपाय ।
थमसी बेंतो बायरो,
श्रासी मेह घणाय ।

× × ×

शकुन्तल थकेड़ी थमगी ही,
टीलं पर जायर जमगी ही ।
मन में सोचै ही घणी घणी,
आसै पासं हो बणी घणी ।

कीनै जास्यूं की घर जास्यूं,
कीं घर जायर पूत सुवास्यूं ।
एक नार, दूजो पग भारी,
कूकर पड़सी पार बात री ।

इत्तै में उठी बादळियां,
बरसणलागीघण सावणियां ।
घनघटा श्रौसरी महाजाळ,
ज्यू फोड़ण चाली ही पताळ ।

आंधी रो इक सूंसाट उठ्यो,
च्यारुँ कूँटा अरड़ाट उठ्यो।
डूँगै अम्बर धरड़ाट उठ्यो,
रुँखांमें झट जरड़ाट उठ्यो।

हरण उठी शकुन्तल कूट तकै,
इत्ती ताकत ही बठै कठै।
कंप कंपी चढ़ी काया धूजी,
बचणै री राह नहीं सूझी।

आंख्या में घोर अंधेरो हो,
इक दरखत दीख्यो नेड़ो हो।
दरखत रै पेडै जाय अड़ी,
सूनी होगी ही पड़ी पड़ी।

जागी जद कुटिया में सूती,
देखी बरण नार्‌यां दो ऊभी।
सारै बै आग जगावै ही,
तन च्यारूँमेर तपावै ही,

ऊँडी पेडू में पीड़ उठी,
दोनां मन में सा बात पढ़ी।
सगळां रो दुख हो हिल्यो मिल्यो,
पळ में आंचल मैं फूल खिल्यो।

सत सासन पालन रट राठ रख्यो,
मन मनन नकुन्न रो मान लिन्यो ।
जगत में जगत गात छिड़्यो,
हूनो हूंगो हो नाम छड्यो ।

कस्यप जोगी पूंजयो,
राख्यो नाम भरत ।
'धरती गैड़ो ना हुयो,
गैड़ो बणै चरित ।'



सातवों सर्ग

तूं चाल कलम आ चालां,
दरबार दुषन्त जठै हो।
गळचट में फंसर्यो राजा,
करण के आज अठै हो।

मछवो सामै इक ऊभो,
कांपै ही काया थर थर।
राजा रै हाथ अंगूठी,
निरखै हो बीनै तर तर।

माथै पर भाव बणै हा,
मडै हा फेर मिटै हा।
अे कुण सै आखर बांचै,
के के अै बात कवै हा।

ईनै ओ कवच तणायो,
तरकस अर धनस समायो।
मातल आयो लेवण नै,
इनै ओ गूंठी ल्यायो।

झालल इन्दर रो भेज्यो,
मोटो मंत्री मानीज्यो ।
हो सुर असुर रो झगड़ो,
दानव हो तेज भरीज्यो ।

दानव जे जग में होसी,
मानव के सुख स्यूं रैसी ।
सावळ समझायां दानव,
कांवळ ही कावळ करसी ।

कांटो कांटै स्यूं निकळै,
नीं कांटो घाव दुणीजै ।
जग में ओ याद भरै है,
जे कांटो प्यार पुजीजै ।

ओ सूरवीर बांकड़ला,
काटै कांटै री खेती ।
मिनखां रो धान हिराळी,
आवै सिट्टा में छेती ।

पण बीनै याद करायी,
गूंठी हिवड़ै री राणी ।
मूरत सी मंडी शकुन्तल,
ऊभी ही हियै पिछाणी ।

[illegible] [illegible] हो [illegible],
[illegible] है [illegible] [illegible] हो।
ऊपर तो नाम दुष्यन्त हो,
आ खोटै प्यार तुली हो।

ईनै तो खड़ी शकुन्तला,
जंगलां में खड़ी कुलावै।
दीनै हो करम मिनख रो,
दोनूं हण तोल करावै।

हण प्रेम नेम तराजू,
तोलण लाग्यो हो सूरो।
प्रेम मिनख रो अपणो,
पण नेम सकल समूह रो।

स्वारथ डोवै जगती नै,
एकल रो अरथ सकल में।
जे सुरग धरा पर ल्याणो,
रखणी आ बात अकल में।

के सुरग कल्पना कोरी ?
माणस री अक्कल थोड़ी।
जे असुर मरै ईं मन रो,
तो सुर स्वयं ही ओही।

इन्दर रो सुरग बचाणो,
दानव नै मार भगाणो।
दुषन्त लियो हो निरणाय,
मानव रो धरम टिकाणो।

तरकस अर तीर सम्हाल्या,
चट चढ़ विमाण पर चाल्या।
पल पल हो इन्दर डीकै,
अगवाणी करर सम्हाल्या।

अब सूर समर में जूझ्यो,
असुरां री सेना लांबी।
दारु रै मद मे झूमै,
बिकराळ खड़चा हा सामी।

सै धनस ताण हा खींच्या,
हाथ्यां पर घणा तणीज्या।
लांबी लांबी ही मूंछ्यां
आंख्यां में रोस भरीज्या।

हा काळ नेम रा बंशी,
दुरजय हा नाम धरीज्या।
इन्दर रो राज छुटावण,
दानव हा जुध में जूझ्या।

इन्दर री फौजां रथ में,
ही खड़ी सांतरी जच्ची।
जोधां री खड़ी कतारां,
जुध रै रंगत में रच्ची।

ललकार कर्यो अब राजा,
दानव हण नहीं रखैलो।
हूँ एक एक नै [illegible],
आरज री भूप [illegible]।

ओ सुरग [illegible] धरती,
दानव री [illegible] [illegible]।
ओ सूरजगो [illegible] [illegible] तक,
सुर र [illegible] रखैलो।

बाजी [illegible] रण री,
जोधा में [illegible] [illegible]।
सै बाण [illegible] [illegible],
दानव री सेना [illegible]।

तर-तरवा [illegible] चाल्या,
सूंसाट [illegible] मगळै।
धूँ धुंआधोर सो मच्चग्यो,
[illegible] अब जाड़ा रगड़ै।

ज्यूं ज्यूं वैं वीर बढै हा,
लाशां पर आप चढै हा।
हण हुयो हौंसलो ऐड़ो,
तीरां पर तीर कढै हा।

असुरां रो असर न ओजूं,
चौगड़दै हीण हुयो हो।
कोत्यूं तो मार गिराया,
लूंठा में रोस वड़्यो हो।

सामी आ छाती अड़ग्या,
बै वार करै अणहूंता।
सूरां री छाती फड़की,
आवै जूयां पर जूथां।

अगनी रा बाण चलाया,
बरसै ही आग धधकती।
देवां री काया कांपी,
लख भोभर घण बरसती।

आभो हण अगणी बरसै,
पैरां में आग पड़ी ही।
घोड़ां रो हिवड़ो हाल्यो,
ओड़ी आ इसी पड़ी ही।

दुषन्त हरौ हुँकार्यो,
भेरी धरती रा बीरो।
ना कायर पूठ कुहाओ,
ना दुशमण पीठ दिखाओ।

मरणो है या जीणो,
ई जीणै खातर मरणो।
ओ धरम नहीं सूरां रो,
मरणै खातर के डरणो।

झण मेघ बाण सम्हाल्या,
कानां तक ल्याय चलाया।
आभै में बिरखा फूटी,
खाळां पर खाळ चलाया।

अगनी री ओभर बूझी,
दानव री काया धूजी।
हण अगनी बाण अफळ हा,
अब और न साया सूझी।

बै गेर तीरड़ा भाज्या,
लैरें स्यूं मार पड़ीज्या।
दुशमण रो बीज न रैवै,
नौला है दया पसीज्या।

आ आसा चिमकी शकुन्त हिय,
मनड़े री वेलां लहराई ।
जीवण रा आखा फूल खिल्या,
हिवड़ै रो पांख्यां फैलाई ।

सूती शकुन्तला कुटिया में,
पसवाड़ै गीगो सोयो हो ।
निधड़क हा दोनूं नींदा में,
अम्बर चंदै ले धोयो हो ।

उचटी शकुन्तला चाणचकै,
सपनै में दीख्यो परणीज्यो ।
भळक्यां आंख्यां में आंसूड़ा,
पूंछण में आंचलियो भीज्यो ।

फेर्‌यो पसवाड़ो चूम लिया,
गीगै रै गोरां गालां नै ।
हिवड़ो हिमजळ सो होग्यो हो,
मोती मिलग्या हा माळा नै ।

दिनड़ा यूं घटता जावै हा,
नव बूंटा बढ़ता जावै हा ।
पल ज्यूं ज्यूं आवै जावै हा ।
ऊपर रा टुकड़ा खावै हा ।

नानड़िया छरण छरण बढ़ता हा,
जौबन रा चलपल घटता हा।
बूढ़ा बोदै रो बास छोड़,
आगै री आशा करता हा।

पलड़ा बीत्या, दिनड़ा बीत्या,
मीना बीत अर बरस बीत्या।
दुख सुख री मिलवां घड़ियां में,
जिन्दगी रा छै बरस रीत्या।

सरदी री शीतळ वेळा ही,
हिम स्यूं भीजेड़ी पून चलै।
गाबां में तीखी लागै ही,
आभै स्यूं जाणै बरफ झरै।

परबत री टोख्यां धोळी ही,
ज्यूं सीयाळै रो ताज हुवै।
धोळै बरणो सो आसमान,
ज्यूं हिम रो आखो राज हुवै।

सै जीव जम्या हा कूणा मैं,
ओ रट्ठ ओसर्यो भैड़ो हो।
कै मिनख बाळगे आग तपै,
कै बैठ्या नेड़ै तेड़ै हो।

गाबा हरण प्यारा लागै हा,
आंख्यां में सारा जागै हा।
सी-सी करता डरता सगळा,
सै अन्त काम में लागै हा।

बेटो सूत्यो हो माची पर,
माता जाग्योड़ी बैठी ही।
जागण री बेळा होगी ही,
माताजी घणी अडीकै ही।

बोली माता हरण बेटै नै,
सूरज री आभा जागी है।
तूं जाग जाग रे जाग जाग,
जागणं री बेळा आगी है।

ओ आरज भूमि रा सपूत,
आंचल्न रै दूधै रा दुलार।
मां रा लाड़ेसर लाल बाल,
आशा में पाल्यो एक प्यार।

शेरां रा बाळ अडीकै है,
सागै खेलण नै गायड़मल।
बाघां रा लाल अडीकै है,
सागै रम्मण नै फूटरमल।

भूमी रो भार अडीकै है,
धरती पर धरम उतारण नै ।
दुखिया रा आंसू डीकै है,
सुख री सुरसर ल्यावण नै ।

च्यारूं कूंटा में चिड़कोल्यां,
निरमाण जगावण आगी है ।
तूं जाग जाग रे जाग जाग,
जागण री वेळा आगी है ।

बेटा ओ देश घणो मोटो,
मरजादा ईं री मोटी है ।
आ धरा धरम नै पालण में,
धारी बस एक लंगोटी है ।

मोटी है मां रो नाम घणो,
मोटो है मां रा घणा काम ।
दुनियां में मोटा कामां स्यूं,
मां रो है मोटो घणो नाम

मां रो नित मीटो नाम रवै,
मीटी मायड़ आ सबळा है ।
मां रो ओ नाम नहीं लाजै ।
एहड़ा सै कारज करणा है ।

सै करम धरम रा नेम थाम,
मायड़ री मरजादा जागी है।
तूं जाग जाग रे जाग जाग,
जागण री बेळा आगी है।

आंचळ रो दूध लजाई ना,
कूमाता पूत कुहाई ना।
ई मां रो जायो बेटो तूं,
माता रो नाम डुबाई ना।

दुखिया नै कदै दुखाई ना,
थाके नै कये थकाई ना।
अपणी सीमा नै पार लांघ,
संत्यै नै कदे सताई ना।

पर री पीड़ा नै खोणं में,
देखी तू मजा घणा आसी।
पर री व्याधी नै ढोणं में
माणस रो धरम समझ आसी।

जीवण रो मरम बतावण नै,
फूलां री कळियां जागी है।
तूं जाग जाग रे जाग जाग,
जागण री बेळा आगी है।

भरत उठ्यो ज्यूं भूप उठ्यो,
माता रो सागण रूप उठ्यो।
हो लोल लटां री लटखाई,
ओ मंजुल रूप अनूप उठ्यो।

ज्यूं कमल खिल्यो सरवरियै में,
आभै में जाणै चांद खिल्यो।
ज्यूं दिवलो जोयो अंधियारै,
ज्यूं खोयै हिय नै प्यार मिल्यो।

गालां री लाली लालफूल,
नैणा ज्यूं ऊपर दीप जगै।
कोरां में काजळ घाल्योड़ो,
ज्यूं फूलां ऊपर भंवर रमै।

हण भरत कलेवो ले खायो,
तिरक बाणां ली बण सम्हाळ।
ले बाघ बघेरा बचिया नै,
रूंखां पर मांड्या हण निशान।

सूंसाट ऊपड़ै बाणां रो,
धड़ धड़ंद रूंखड़ा जाय पड़ै।
गरणाट ऊपड़ै गहवर में,
बब्बर डूंगर में जाय बड़ै।

बै चढ़ै शेर री पीठ्यां पर,
गादड़ सो डांगर गरळावै ।
बो पकड़ जबाड़ी जकड़जंत,
जंगळ रो राजा अरड़ावै ।

लख माता मन में हरखावै,
थापी दे कुटिया बड़ ज्यावै ।
आगै री स्याणी बात बता,
कारज में ओजूं जम ज्यावै ।

इत्तै में घुड़ला टाप सुणी,
नेड़ै आ घुड़लो थाम लियो ।
बण देख भरत नै यूं रमन्ता,
अचरज में एड़ो बैण कयो ।

'कुण है तू, के है नाम बता ?
कीं रो तू बेटो पोतो है ।
है किसो धाम ? है गांव कठै,
के जात पांत के गोतो है ?'

बो ठहर कयो, 'हे राजभेष,
हूं जंगळवासी है भरत नाम ।
बेटो हूं अपणी माता रो,
है राजकरण रो काम धाम ।'

राजा ने थोड़ो बहम हुयो,
बोल्यो बो 'तेरी मात कठै ?'
इत्तै में बारै आ शकुन्त,
जड़सी होगी ही जठै कठै ।

दोनां री नैणा ही एक तार,
होगी ज्यूं घणी पिछाणी सी ।
समझ्यो दुषन्त 'आ सागण है,
परणीजी सहज सुहाणी सी ।'

बोल्यो बो राणी शकुन्तला,
बस खमा करो बड़ भूल हुई ।
अक्कल में जाणै के वड़ग्यो,
आ ऐन जकड़'र मूळ हुई ।

हूं नहीं पिछाण्यो के जाणू,
आ भावी इसी बिताणी ही ।
पछताओ इसो बड़चो माथै,
आ बणी इसी कहाणी ही ।

आयो मछवो आ गूंठी ले,
मछली रै पेट मिली बींनै ।
सा याद पुराणी जद आई,
सा धरा छाण आयो ईनै ।

आ भूल माफ रै जोग नहीं,
ओ जोग इसो थानैं दीज्यो।
रण वासा रहणौं जोगा हा,
जंगळ में वासो कर दीन्यो।

राणी बोली, हे कन्त सुजन,
भागण हूँ आज घणी मोटी,
ओ दोष कियाँ थानैं देऊँ,
तकदीर मेरली ही खोटी।

अै दुख है माणस खातर ही,
दुख में फिर रोणो धोणो के।
हूँ झेल लिया कीं आसा में,
दुख में है आपो खोणो के।

ओ म्हारो तप पूरो होग्यो,
दुरवासा शाप उतरग्यो है।
म्हारो जीवण रो सूरजड़ो,
डूब्योड़ो आज निसरग्यो है।

ओ बेटो थारो है भरत नाम,
शेरां रै साथ रमायो है।
आछी हूँ सिकस्या दीनी है,
आछो हूँ काम बतायो है।

बोल्यो राजा राणी मेरी,
तप में तप्योड़ो भरत कुंवर ।
आरज भूमि पर राज करै,
माता री भावी बणै सुघड़ ।

हूँ आज ढ़िंढोरो पिटवाद्यू ँ,
माता रो 'भारत' नाम धरां ।
राणी स्यूं जामी मोटी है,
आ बात जगत सरनाम करां ।

राणी बोली, म्हारा स्वामी,
हूँ कलपी भूली आज सकल ।
दे सकी भरत सो पूत आज,
मेरी काया रो नाम सफल ।

के नार ? नार री कूख बड़ी,
के नारी नूर रूप स्यूं है ।
पत्तां स्यूं कांई फुटरापो,
बूंटै रो मोल फूल स्यूं है ।

इत्तै में कश्यपजी आ पूंच्या,
मोटा तप में हा तप्या रिसी ।
जोड़ी नै देख हरख होयो,
अै घड़ियां ही अणमोल इसी ।

अभ्यास सारू सवाल

पैलो सर्ग

१ विश्वामित्र तप क्यूँ सरू कर्यो —
  (क) वो धन रो भूखो हो।
  (ख) अपणी काया रो काट उतारै हो।
  (ग) मेनका स्यूँ ब्याव करणो चवै हो
  (घ) इन्द्रासण री कामना ही।
  (ङ) वो भगवान् रो दरशण करणो चावै हो। [

२ मेनका नैं धरती पर क्यूँ रैवणो पड्यो —
  (क) बींरै मनै सुरग पूंचणै रो साधन कोनी हो।
  (ख) बा सुरग स्यूँ ऊबगी ही।
  (ग) इन्द्र स्यूँ आणै री मंजूरी कोनी ही।
  (घ) बण विश्वमित्र स्यूँ ब्याव कर लियो हो।
  (ङ) बा धरती पर घूमणो चावै ही। [

३ मेनका नै धरती पर क्यूँ भेजी ?

४ इन्द्र कठै रो शासक हो ?

५ बा पगत लिखो जकी में तप भग सारू नरतकी नैं भेजणं री भावना मिलै है।

६ इन्द्र सभा क्यों बुलाई ही ?

७ इन्द्र रा सभासद् कांई निरणय लियो ?

८ शकुन्तला रो नाम 'शकुन्तला' क्यूँ पड़्यो ?

९ शकुन्तला कण्व रीसी रै आश्रम में कयां पूंची ?

दूजो सर्ग

१ कण्व रै आश्रम में भगदड मची, क्यूँके

(क) कई लुटेरा तपोवन नै लूटण आग्या हा।

(ख) एक जगां गोल्यां चालगी ही।

(ग) जोर रो चोरी कांड होग्यो हो।

(घ) मोटा मेहमान आग्या हा।

(ङ) दुषन्त रै घोड़ां रै टापां स्यूं हल चल मचगीही। [ ]

२ दुषन्त अर शकुन्तला रो ब्याव आजकल री तरियां क्यूँ कोनी हुयो ?

(क) शकुन्तला ईं विध रै पख में कोनी ही।

(ख) ब्याव री आ बिध वा दिनां ही कोनी।

(ग) दुषन्त कनै टेम कोनी हो।

(घ) कण्व रीसी ईं ब्याव रै पख में कोनी हो।

(ङ) ब्याव री आ विध बा दिनां ही। [ ]

३ झर झर झरणा झरता हा

ईं पंगत में कुणसो अलकार है ?

(क) उपमा (ख) रूपक (ग) वृत्यानुप्रास

(घ) छेकानुप्रास (ङ) यमक [ ]

ग्रां पंक्तयां में कींरी महत्ता वढ़ी ?

(क) दुरवासा (ख) दुष्यन्त (ग) मूंदड़ी

(घ) भावी (ङ) शकुन्तला [ ]

५ ग्रै काया तेरैं करमां में,

के के भावी रा जाळ बीछ्यां।

ग्ररै विधाता ईं पोथी में,

काळा पीळा के लेख लिख्या।

ईं पद्यांश रै पढ़णै स्यूं पाठक रै मन में कांई बिचार उठै ?

(क) भविष में ग्रंधेरो ही ग्रंधेरो है।

(ख) जीवण पीड़ स्यूं भर्यो है।

(ग) ग्रांगूच निरणय लेणो फालतू है।

(घ) जिन्दगानी में निराशा ग्रर कुंठा भरी पड़ी है।

(ङ) ग्रागै रो ग्रनुमान कोनी लगायो जा सकै। [ ]

६ कवि साधु सारु 'मोडो' शब्द क्यूं काम में लियो ?

७ शकुन्तला दुरवासा रै शाप रै बाद मूंदड़ी तुरत क्यूं संभाळी ?

८ दुरवासा ग्रापरै शाप में संशोधन क्यूं कर्यो ?

९ बां पंगल्यां नै छांटो जकै रै मांय कवि ऊंध्याळै रो वरणन कर्यो है, ई बरणन में कांई खासियत है।

१० ईं सर्ग में दो बार शकुन्तला भगवान् नै याद कर्यो, दोनूं बारां रो मंतव्य री तुलना करो।

चौथो सर्ग

१. जे फिरै विराइ बेटी यूँ,
के दुख न उठै ई माता नै
आ पंगत्या में बेटी (शकुन्तला) "विराई" कींया बताई गई।
(क) शकुन्तला रै तन में पीड़ ही।
(ख) बींनै बीरो मिनख लेवण कोनी आयो।
(ग) बा सासरै जाणो कोनी चावै ही।
(घ) बा माइतां स्यूँ नाराज ही
(ङ) मौसम उदास हो। [ ]

२ माँ बोली 'थे तो दुनियाँ स्यूँ"
अपणो ओ मुखड़ो मोड़्यो है'।
आं पंगत्यां में गौतमी कांई कैणो चावै है ?
(क) कण्व आपरी व्यवस्था सारू जागरूक कोनी हो।
(ख) रीसी नै आश्रम छोड़'र नीं जाणो चाहिजै।
(ग) बीनै आपरो मूंडो सीधो राखणो चाहिजै।
(घ) बींरी उपेक्षा री नीति ठीक कोनी।
(ङ) शकुन्तला नै सासरै भिजवाणी चाहिजै। [ ]

३ जे भोळी नारी जीवण नै,
दुरवासा इयां रुळा देसी।

(ख) बादळा स्यूँ पाणी बरस्यो, पण बाग कोनी ऊग्या ।
(ग) पाणी बरसणै स्यूँ बाग कोनी ऊग्या ।
(घ) घणी बिरखां स्यूँ बाग मुरझाग्या ।
(ङ) शकुन्तला घणी रोई पण दुषन्त रो हिवड़ो कोनी पिघल्यो
[ ]

५ दुषन्त शकुन्तला नैं कोनी पिछाण सक्यो, क्यूँके,
(क) शकुन्तला रै डीलडोल में फरक हो ।
(ख) दुर्वासा रै शाप रो परभाव हो ।
(ग) शकुन्तला स्यूं मिल्यां भोत दिन होग्या ।
(घ) शकुन्तला री मूंदड़ी गमगी ही ।
(ङ) शकुन्तला रै मूंडै घूंघटो हो । [ ]

६ गृहमंत्री लोकराज रै विरोध में कांई दलील दी ?

७ शकुन्तला रै घूंघटो उतारणै रो कांई अरथ हो ।

८ 'म्हारी परणी है शकुन्तला ?' में कुणसो भाव छिप्योड़ो है ।

९ शकुन्तला आपरै पख में कांई कांई तर्क दिया ।

१० आप कियां कह सको हो के ईं सर्ग में संवादां रो वरणन सांगोपांग हुयो है ।

११ शकुन्तला गौतमी रै साथै पूठी जाणै सारु नकारगी, क्यूं ?

छठो सर्ग

१ डूँगर घणा डरावै हा,
दरखत आंख दिखावै हा ।

डूँगी गाजै गाज शेर री,
गादड़िया अरड़ावै हा ।
आ पंगत्यां में कुणसै परिवेश रो चितराम है ?
(क) भय (ख) विषाद (ग) निराशा (घ) वेदना
(ङ) प्रलाप [ ]

२ 'ऊँचो माथो लिया फिरै'
ई पंगत में मिनख रै मन गी कुणसी स्थिति रो वरणन है ?
(क) अहं (ख) लज्जा (ग) सन्तोष (घ) द्वेष (ङ) कायरता
[ ]

३ थमसी बैंतो बायरो
आसी मेह घणाय ।
आं पगत्यां स्यूँ कुणसो अर्थ निकळै है ?
(क) हवा रै ठहरणै स्यूँ बिरखा थमै है ।
(ख) दुख रै पाछै सुख आवै है ।
(ग) हवा आवै है अर बिरखा सरू हुवै है ।
(घ) हवा रै चालणै स्यूँ बिरखा आवै है ।
(ङ) जित्ती हवा चालै है बित्ती बिरखा आवै । [ ]

४ इत्ती में उड्डी ....जरड़ाट उठ्यो है ।
आं पंगत्या में काव्य सौष्ठव रो बरणन करो ।

५ डूँगर घणा डरावै हा,
दरखत आँख दिखावै हा ।
आं पगत्यां में प्रकृति रो मानवीकरण है. कियाँ ?

६ डरावणै जंगळ में शकुन्तला री जकी मन री हालत बणी, आप री भाषा में लिखो ।

७ शकुन्तला रै भाग खुलणै रो बरणन कुणसी पंगत्यां में मिलै, लिखो ।

(क) छेकानुप्रास (ख) लाटानुप्रास (ग) वृत्यानुप्रास (घ) यमक (ड़) श्लेष

[ ]

३. सूंसार ऊपड़ै .... जंगल अरड़ावै।

आं पंगत्यां में भाव है—

(क) वेदना (ख) हास्य (ग) व्यंग्य (घ) विनोद (ड़) उत्साह

[ ]

४. म्हारो जीवण रो सूरजड़ो डूब्योड़ो आज निसरग्यो हो—

ईं पगत में शकुन्तला कांई कैवणो चावै है ?

(क) सूरज नाम रो आदमी डूबग्यो हो, आज निसरग्यो हो

(ख) डूब्योड़ो सूरज निसर आयो।

(ग) निरभागण रो भाग जागग्यो।

(घ) सूरज रो भाग जागग्यो।

(ड़) डूबेड़ी किरण बांरै निसरगी। [ ]

५. 'टूट' अर टोटो स्यूं कांई अरथ समझो हो ?

(क) पीड़ (ख) कुंठा (ग) घुटण (घ) अभाव (ड) टूटणो

[ ]

६. भरत आपरो परिचय कियां दियो।

७ दुषन्त शकुन्तला नै कयां पीछाणी ?

८. बा पंगत्यां नै छांटो जक्यां में भरत री निशानी बाजी रो चितराम है।

९. जागरण गीत रो बरणन राजस्थानी में १०० शब्दां में लिखो।

१०. शकुन्तला रै आशावाद री समीक्षा करो।

११. कश्यप रीसी री भावनावां रो अपणै शब्दाँ में लिखो।

छठो सर्ग

आमै सामै - आमने सामने
डूंगर - पहाड़
अरड़ावै - जोर से रोना
दग्गड़ - पत्थर
उभाणीं - विना जूतों के
कूणै - कोना
ऊभी - खड़ी हुई
सीयाळै - सर्दी
आरज - आर्य
गायड़मल - लाडला बच्चा
फूटरमल - सुन्दर बच्चा
संत्यै - सताया हुआ
कलेवो - नाश्ता
डांगर - पशु
ढिंढोरा - ऐलान
टूट - अभाव
टोट - अभाव

सातवों सर्ग

गळचट - दुविधा
सावळ - उचित
कावळ - उलटा
लोथां - लाशें
चौगड़ दै - चारों ओर
अणहूंता - अनजाने
भोभर - आग
ओडी - संकट
भीखो - संकट
हणन्त - हनन करनेवाला



आठवों सर्ग

मावस - अमावस्या
चाणचकै - अचानक
नानड़ियो - छोटा बच्चा

पूरै खण्ड काव्य स्यूँ

6 अ - 93

१ अपणै गुरुजी स्यूँ जाणकारी करो के खण्ड काव्य अर महाकाव्य में कांई फरक है ?

२ प्रबन्ध काव्य दूजै काव्यां स्यूँ कियां अलग है।

३ ईं काव्य में आपनै कुणसो सर्ग सगळाऊँ बढिया लाग्यो अर कियाँ ?

४ नीचै लिख्या पात्रां रा काव्य रै आधार पर चरित्र चित्रण करोः-
(क) शकुन्तला (ख) दुषन्त (ग) कण्व (घ) दुरवासा (ङ) कश्यप

५ ईं काव्य में कुणसी रीतुवां रा बरणन मिलै है, प्रकृति बरणन में कवि कठै तांई सफल हुयो है, अपणो विचार लिखो।

६ शकुन्तला रा कवि करणीदान बारहठ रो पूरो परिचय दयो।

७ शकुन्तला रै बिना राजस्थानी रा और खण्ड काव्यां री जाणकारी देओ।

८ नुंई राजस्थानी साहित्य रै दूजै कवियां रो परिचय दयो।

९ खण्ड काव्य री निजर स्यूँ आप हिन्दी अर राजस्थानी री तुलना करो।

१० 'मातर भासा रै माध्यम स्यूँ शिक्षा' पर एक लेख लिखो।